ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

इस अंक का मूल्य : 10 रु

वर्ष 41, अंक 23

सोमवार 26 मार्च, 2018 से रविवार 1 अप्रैल, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

होली के दिन

आर्य परिवार होली मंगल मिलन

इस बार 4 मास के शिशु से 98 वर्ष की आयु के बुजुर्ग आर्यों के परिवारों के मिलन का केन्द्र बना आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

विशिष्ठ आर्य परिवार सम्मान प्राप्त करते श्री सुरेन्द्र आर्य जी

समाजसेवी श्री ओम प्रकाश गोयल जी को स्मृति चिह्न भेंट करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं डा० योगानन्द शास्त्री जी

उद्बोधन देते डॉ. अशोक कुमार चौहान जी

उद्बोधन देते श्री सुरेन्द्र आर्य जी

समारोह में उपस्थित हजारों परिवारों से सराबोर हुआ आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा संचालित रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार

समारोह के अवसर पर अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान

पं फूलचन्द शर्मा 'निडर' परिवार भिवानी का सम्मान

ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान-2018 प्राप्त करते ब्रह्मचारी अरुण कुमार 'आर्यवीर'। साथ में हैं श्री योगेश मुंजाल जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महाशय धर्मपाल जी एवं श्रीमती शारदा आर्या जी

डॉ. अशोक कुमार चौहान जी का स्वागत करते टकारा समाचार के सम्पादक श्री अजय सहगल जी

श्री सुरेन्द्र आर्य जी का स्वागत करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। साथ में श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी

महाशय धर्मपाल जी को स्मृति चिह्न भेंट करते अधिकारीगण

डॉ. अशोक कुमार चौहान जी, संस्थापक अध्यक्ष एमिटी को स्मृति चिह्न भेंट करते सभा प्रधान धर्मपाल आर्य जी। साथ में हैं श्री सुरेन्द्र आर्य जी एवं महाशय धर्मपाल जी। इस अवसर पर चौहान परिवार के सभी सदस्यों का भी सम्मान किया गया।

समारोह में पधारे सबसे नव विवाहित जोड़े का सम्मान

समारोह में उपस्थित सबसे छोटे बच्चे एवं उसके माता-पिता का सम्मान

समारोह में पधारे सबसे अधिक आयु के दम्पति का सम्मान

ईनामी कूपन

हास्य एवं काव्य सुनते आनन्द विभोर आर्यजन

समारोह स्थल पर लगाए गए विभिन्न संस्थाओं के स्वागत बोर्ड

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की समसत आर्य समाजों के सहयोग से

16वाँ आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

ब्र. अरुण कुमार 'आर्यवीर' को दिया गया 2018 का ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान

पं. फूलचन्द शर्मा 'निडर' परिवार, श्री सुरेन्द्र आर्य जी एवं एमिटी परिवार का हुआ विशेष अभिनन्दन

भारत सुपर पावर बनेगा: आर्य समाज का होगा इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान - डॉ. अशोक कुमार चौहान

दिल्ली में पुन: अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की घोषणा से रोमांचित हुए आर्यजन : आर्यजन करें तैयारी

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018 कोई भी आर्य संस्था अपना कोई आयोजन न रखे सभी से निवेदन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुवार 1 मार्च 2018 को रघुमल आर्य कन्या सी.से. स्कूल, राजा बाजार कनॉट प्लेस में आयोजित 'आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह आर्य जगत के भामाशाी महाशय धर्मपाल (चेयरमैन एम.डी.एच.ग्रुप) ने भारी संख्या में पधाारे आर्य परिवार को शुभकामनाएं देते हुए कहा ''फूलों व प्राकृतिक रंगों से होली खेलना आदर्श परम्परा है। महाशय जी ने अपने सम्बोधन को आगे बढ़ाते हुए बताया कि 'मैं एक ऐसी कार्य योजना को बना रहा हूं जो आर्य जगत के लिए इतिहास बनेगी। बस मैं जिस काम को करने जा रहा हूं उसमें कामयाब हो जाऊं उसके लिए आपका सहयोग चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमिटी संस्थापक डॉ. अशोक चौहान ने अपने वक्तव्य में कहा ''भारत सुपर पावर बनेगा और इस कार्य आर्य समाज की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होगी।''

डॉ. सोमदेव जी ने अपने उद्बोधन में कहा 'हमारे समाज में वेदों का ठीक प्रकार से प्रचार न होने से ही अधविश्वास और पाखण्ड की वृद्धि हुई है। इसी कारण आज वृद्धावस्था असुरक्षित है और विद्वातजन भी अपना पूर्ण सम्मान पाने से वंचित हो रहे हैं।''

आजीवन ब्रह्मचारी व्रत धारण करने वाले ब्र. अरुण कुमार आर्य वीर (पूर्व नाम माईकल डिसूजा) को ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह का शुभारम्भ मुम्बई से पधारे वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में पूर्ण वैदिक विधि द्वारा नव सस्येष्टि यज्ञ से हुआ। यज्ञ में श्रीमती मोहनी देवी एवं श्री यशपाल आर्य, श्रीमती रूपांशी एवं श्री विपुल सूद, श्रीमती विद्या एवं श्री मनोहरलाल गुप्ता, श्रीमती कल्पना एवं श्री प्रकाश शर्मा, श्रीमती रंगोली एवं आयुष आर्य, श्रीमती वर्षा एवं श्री संजीव आर्य, श्रीमती नीतू एवं श्री संजीव मल्होत्रा जी यज्ञमान बने। यज्ञोपरान्त डॉ. सोमदेव जी द्वारा सभी यज्ञमानों का पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया व सभा पदाधिकारियों द्वारा यज्ञ को सफल बनाने के लिए ब्रह्मा व यजमान का धन्यवाद दिया।

मंच का संचालन महामंत्री श्री विनय आर्य ने किया व कार्यक्रम की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी ने की। श्री विनय आर्य ने सभा के आगामी कार्यक्रमों की घोषणा करते हुए बताया कि इस वर्ष अक्टूबर 2018 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में आयोजित होगा जिसमें लगभग 36 देशों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ भारत के लोग भी हर प्रान्त से भारी संख्या में आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे जिसके लिए आपने अभी से अपनी कमर कसने की जरूरत है।

सभा 1 अप्रैल को अधिकतम जनसंख्या दिवस के रूप में मनाएगी। इस दिन अपनी-अपनी आर्य समाजों के यज्ञ कार्यक्रमों में सपरिवार/रिश्तेदारों ईष्ट- मित्रों के साथ यज्ञ में शामिल होकर अपनी उपस्थिति ज्यादा से ज्यादा दर्ज कराएं।

सभा 15 अप्रैल से 30 अप्रैल 2018 तक अन्धविश्वास निरोधक माह का आयोजन कर रही है जिसके लिए सभा की ओर से जादूगर व सामान की व्यवस्था होगी आपको अपने समाज की ओर से केवल मंच व माईक की व्यवस्था करनी होगी। यदि कोई आर्य समाज अभाव ग्रस्त होगी तो दिल्ली सभा उसकी सहायता अवश्य करेगी।

6 मई 2018 को 20वां आर्य युवक-युवती विवाह परिचय सम्मेलन आर्य समाज कीर्तिनगर में होगा जिसके लिए ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन चालू हैं आप भी अपने विवाह योग्य बच्चों का रजिस्ट्रेशन अवश्य कराएं अथवा श्री सतीश चड्ढा जी से सम्पर्क करें।

सभा 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली में 1500 याज्ञिक एक स्थान पर यज्ञ करेंगे। स्थान की घोषणा शीघ्र ही की जाएगी।

आर्य समाज प्रतिभा विकास संस्थान का निर्माण किये जाने का प्रस्ताव भी सभा के पास सुरक्षित है, जिसकी घोषणा जल्द ही सभा की ओर से की जाएगी।

कार्यक्रम में गुरुकुल गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम्, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीखामपुर, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल तथा आर्य समाज रानी बाग ने बहुत ही सुन्दर-सुन्दर लघु नाटिकाएं, गीत इत्यादि के बच्चों ने मनमोहक व हृदयस्पर्शी प्रस्तुत देकर सभी को भाव विभोर कर दिया। हरियाणा से पधारे हास्य कवि श्री अनिल अग्रवशी ने अपनी हास्यरस की कविता व चुटकियों से भी को हंसा-हंसाकर लोटपोट कर दिया। आर्यवीर दल कीर्तिनगर द्वारा श्री कृष्ण- सुदामा प्रस्तुति पर श्री विनय आर्य ने कहा कि 'हमने गरीबों को गले नहीं लगाया इसी वजह से आज देश जन संख्या असंतुलन से जूझ रहा है। यदि हमने छुआ-छूट का भेदभाव मिटाकर सभी को गले लगाया होता आज हमारा देश निश्चित ही सोने की चिड़िया वाली कहावत को चरितार्थ कर रहा होता।' इस अवसर पर बच्चों ने 'मांसाहार नहीं करने व ना परोसने का' संकल्प लिया।

इस अवसर पर दो इनामी कूपन निकाले गये जिसमें प्रथम पुरस्कार सागरपुर निवासी श्री फूल सिंह जी को व द्वितीय पुरस्कार पंजाबी बाग निवासी श्रीमती ललिता मेहता को प्राप्त हुआ। सभा की ओर से इस अवसर पर सबसे छोटी 127 दिन की बच्ची तृप्ती व नवदम्पत्तिको शॉल व स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी, एमिटी विश्वविद्यालय के संस्थापक चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार चौहान जी, श्री आनन्द चौहान जी, जेबीएम प्रमुख श्री सुरेन्द्र आर्य जी, श्री योगेश मुंजाल जी सहित अनेक अतिथि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम की विभिन्न व्यवस्थाओं बनाने में व्यवस्थित रूप से सम्पादित करने में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्यसमाज हनुमान रोड, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाब बाग के अधिकारियों, कार्यालय स्टाफ एवं आर्य कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। इसी के साथ कार्यक्रम स्थल पर किसी भी अनहोनी घटना/दुर्घटना से बचाव के लिए सभा द्वारा दिल्ली के औचन्दी ग्राम में संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ हस्पताल की टीम एवं मन्त्री श्री महेंद्र सिंह लोहचब जी फस्टेड एवं एम्बूलैंस व्यवस्था के साथ उपस्थित थे। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने भी कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं सदस्यों का जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में इस 16वें आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह को सफल एवं यादगार बनाने में सहयोग प्रदान किया, उन सबका हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

- *महामन्त्री*

समारोह में उपस्थित सबसे नवजात शिशु तृप्ति, नव दम्पति एवं सबसे वरिष्ठ बुजुर्ग 98 वर्षीय आर्य महानुभाव का किया गया सम्मान

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

62 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

वेद-स्वाध्याय

षड्रिपुदमनकर्त्ता इन्द्र

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। - अथर्व. 8/4/22
ऋषिः चातनः।। देवता - मन्त्रोक्ता।। छन्दः त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ - कामः -(हे जीव) **उलूकयातुम्** = उल्लू के समान आचरण (मोह) को **शुशुलूकयातुम्** =भेड़िये के चलन (क्रोध) को **श्वयातुम्** = कुत्ते - जैसे व्यवहार (मम्सर) को **उत** = और **कोकयातुम्** = चिड़िया के आचरण (काम) को **जहि** = नष्ट कर दे। **सुपर्णयातुम्** = बाज़ की चाल (मद) को **उत** = तथा **गृध्रयातुम्** = गिद्ध-जैसे बर्ताव (लोभ) को भी **रक्षः** = इन छहों में से एक-एक राक्षक को **इन्द्र** = हे आत्मन्! तू **दृषदा इव प्रमृण** = अपनी दारणशक्ति द्वारा इस तरह विनष्ट कर दे जैसे शिला से मिट्टी का ढेला या मिट्टी का बर्तन फूट जाता है।

विनय- हे जीव! तूने दुर्लभ मनुष्य-जन्म को पाकर भी अभी तक अपने में से पशुताओं को नहीं निकाला हैं तुझ में छह प्रकार के पशुत्व अबतक बसे हुए हैं। मनुष्य-योनि ही वह उच्च योनि है जिसमें आत्मशक्ति जाग्रत की जा सकती है, अतः तू अब अपने इन्द्रत्व को पहचान और अपनी आत्मशक्ति से इन 'षड्रिपुओं' को, छह राक्षसों को, अपने में से विनष्ट कर दे। इनसे अपनी रक्षा करनी चाहिए, अतः ये ही तो असली राक्षस हैं जो तेरे वध्य हैं तुझ में कभी-कभी जो कोकपक्षी की भांति भयंकर कामविकार का राक्षस आता है, उसे तू मार डाल। तू तो संयम कर सकने वाला मनुष्य है। तू तो कभी क्रोधाविष्ट होकर अपने भाइयों पर निर्दय अत्याचार कर डालता है, यह तुझमें भेड़ियापन है। जो भी कुछ द्वेष व हिंसा तू करता है वह सब तुझ मनुष्य में जीवों को मारकर खा डालनेवाले भेड़िए का-सा आचरण है और जिस प्रकार गिद्ध मरते-सिसकते प्राणियों के मांस पर ही दृष्टि रखता है, उसी प्रकार तुझ में दूसरों के नाश पर पुष्ट होने की जो घृणित, लोभमयी वृत्ति उठती है यह भी एक बड़ा दुष्ट राक्षस है; तू इसे भी नष्ट कर दे। एवं, तू उल्लू के आचरण को भी छोड़ दे। जैसे उल्लू को प्रकाश से घृणा होती है उसी प्रकार जो तुझमें तमोमयावस्था में पड़े रहने की प्रवृत्ति और सात्त्विक भाव तथा ज्ञानप्रकाश की चर्चा देखता है, वहां से तू दूर भागा करता है- यह जो प्रवृत्ति है, इसे तू त्याग दे। इसी तरह अहंकार बड़ा बुरा राक्षस है, बाज़ (गरुड़) के समान गर्व= घमण्ड के भाव को भी अब तुझे सर्वथा निकाल देना होगा और तू अब कुत्तापन कब तक करता रहेगा। कुत्तों की तरह आपस में लड़ना और पराये के सामने दुम हिलाना, या जैसे कुत्ता अपने वमन किये को भी चाट लेता है वैसे व्रत करके त्यागी हुई वस्तु को भी फिर ग्रहण कर लेना, इस प्रकार की पशुताएं तू कब तक करता रहेगा? तू तो इन्द्र = आत्मा है, तेरी आत्म-शक्ति के सामने ये विकार कैसे ठहर सकते हैं? जैसे दृषत् अर्थात् शिला पर टकराकर मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है वैसे ही, हे आत्मन्, हे इन्द्र! तेरी भी एक 'मही दृषत्' दारणशक्ति है, तू इसे पहचान!

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पाकिस्तान का हिन्दू न घर का है न घाट का!

.....कई संगठन कलमा पढ़ने वालों को रहने के लिए घर, घरेलू सामान, दहेज का सामान, काम करने के लिए सिलाई मशीनें, नहरों से खेती करने के लिए साल भर पानी का प्रलोभन भी दे रहे हैं। थारपारकर व उमरकोट इलाकों में जबरन धर्म परिवर्तन के मामले ज्यादा आ रहे हैं। जब कोई रास्ता नहीं बचता तो लोगों के सामने दो ही रास्ते बचते है या तो धर्म बचा ले या जीवन! .....

शामियाना सजा, अतिथियों का जमावड़ा हुआ, फूलों की सजावट और इत्र की बौछारें हुई भी हुई। शामियाने के प्रवेश द्वार पर लिखे गये शब्द दावते-ए-इस्लाम की भावना का सम्मान पता नहीं लोगों के मन में कितना था पर जमीन पर दरियाँ बिछी उसके ऊपर कुर्सियां लगी ठीक सामने मंच के इस छोर से उस छोर तक मुल्ला मौलवियों का जमावड़ा था जो खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। दरअसल ये दावत थी इस्लाम को अपनाने की। जिसका आयोजन पाकिस्तान के सिंध प्रांत के मातली जिले में माशाअल्लाह शादी हाल नज्द मदरसा में 25 मार्च को हुआ और 50 हिन्दू परिवारों के 500 लोगों का सामूहिक रूप से जबरन धर्म परिवर्तन करवा दिया गया।

मंच पर पीर मुख्तयार जान सरहदी, पीर सज्जाद जान सरहदी और पीर साकिब जान सरहदी ने कलमा पढ़ा जिसे सभी हिंदुओं को दोहराने को कहा गया। इन लोगों ने पर्दे में बैठी महिलाओं व बच्चों के भी नाम लेकर उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा। सभी हिंदू दुःखी मन और छलकती आँखों से कलमा दोहराते रहे। वहां मौजूद लोगों ने उन्हें नए मुस्लिम बनने की मुबारकबाद दी।

जो लोग कलमा पढ़ रहे थे, उनके चेहरों पर खुशी नहीं थी। वे बच्चों और पर्दो में बैठी महिलाओं के साथ मजबूरी में इस्लाम कबूल कर रहे थे। इनमें से अधिकांश वे थे, जो भारत में शरण लेने आए तो थे परंतु लम्बी अवधि का वीजा नहीं मिलने के कारण उन्हें पाकिस्तान लौटना पड़ा था।

राजस्थान की सीमा के उस पार धर्म परिवर्तन का यह पूरा सिलसिला ठीक उसी दौरान चल रहा था जब जिनेवा में यूएन मानवाधिकार परिषद के 37वें सत्र में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को सिंध प्रांत में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर होने वाले अत्याचारों और जबरन धर्म परिवर्तन, हिन्दुओ की लड़कियों और महिलाओं के अपहरण पर चिंता जताई जा रही थी। इसका संचालन मुस्लिम कनेडियन कांग्रेस के फाउंडर व लेखक तारिक फतेह कर रहे थे।

बताया जा रहा है कि राजस्थान से पिछले तीन सालों में 1379 हिंदू विस्थापितों को पाकिस्तान लौटना पड़ा। ऐसे लोगों का पाकिस्तान में जबरन धर्म परिवर्तन हो रहा था। खबर है अभी भी राजस्थान में लम्बी अवधि के वीजा के लिए 15000 विस्थापित दिल्ली और सम्बन्धित जिलों के एस.पी. ऑफिस के चक्कर लगा रहे हैं। हालाँकि राजस्थान में बड़े स्तर पर 2005 में नागरिकता दी गई थी, उसके बाद से 5000 विस्थापित नागरिकता के इंतजार में है।

ऐसा नहीं है कि हमारे देश में जगह कम है बल्कि यहाँ बहुत बड़ी संख्या में विस्थापित रहते आये है। इनमें लाखों की तादात में तिब्बती शरणार्थियों के अलावा लगभग 40 हजार रोहिंग्या मुसलमान जिनके पास न वीजा है न पासपोर्ट और करोड़ो की संख्या में बंगलादेशी मुसलमान, अफगान हो या इराकी शरणार्थियों समेत भारत दुनिया का सबसे बढ़िया ठिकाना बनता जा रहा हैं। अर्थात अपने देश की अनूठी परम्पराओं का लुत्फ आज सम्पूर्ण विश्व उठा रहा है। परम्पराओं, परिपाटियों एवं एतिहासिक उदहारण की आड़ में हमारे राजनेता भी अपनी हर ख्वाहिश को न केवल पूरा कर रहे हैं बल्कि अपनी कुर्सी भी सुरक्षित रख रहे हैं।

लेकिन जब बात पाकिस्तान से आये हिन्दू शरणार्थियों की होती है तो कथित धार्मिक जगत से लेकर राजनितिक जगत में एक अजीब सी खामोशी छा जाती है। उनके पास वैध वीजा और पासपोर्ट होते हुए भी रहने नहीं दिया जाता जबकि अभी पिछले दिनों जब भारत सरकार ने रोहिंग्या मुद्दे को उठाया तो उनके समर्थन में पूरा विपक्ष कूद पड़ा। कई धार्मिक संगठन सामने आये इन्हें मासूम, परिस्थिति का शिकार, मजलूम और न जाने कितने भावनात्मंक शब्दों से इनका शरणार्थी अभिषेक किया जा रहा था। परन्तु जब इसी महीने पाकिस्तान से अपना धर्म बचाकर भागे हिन्दू भारत में शरण मांग रहे थे तो सरकार से लेकर विपक्ष तक ने अपने कान और आँख बंद कर ली। नतीजा उनके पाकिस्तान वापिस लौटते ही उनका धर्मांतरण कर दिया गया।

ये पाकिस्तान में कोई नया काम नहीं हुआ। ये तो वहां हर रोज होता हैं। पाकिस्तान बनने के बाद जब पहली बार जनगणना की गई थी तो उस समय पाकिस्तान की तीन करोड़ चालीस लाख आबादी में से करीब 20 प्रतिशत गैर-मुसलमान थे। मगर आज पाकिस्तान के 18 करोड़ नागरिकों में गैर-मुसलमानों की सूची में अहमदी समुदाय को शामिल कर लिए जाने के बावजूद वहां गैर-मुसलमानों की आबादी 2 से 3 फीसदी में बची है। 1947 में कराची और पेशावर में लगभग डेढ़ हजार यहूदी बसा करते थे। आज वहां कोई यहूदी दिखाई नहीं देता। विभाजन के समय कराची और लाहौर में दस हजार से अधिक पारसी मौजूद थे जबकि आज लाहौर में 20 से पच्चीस पारसी भी बा मुश्किल से नहीं बचे हैं। गोवा से कराची में आकर रहने वाले ईसाईयों की संख्या वहां कभी 20 हजार से अधिक थी आज ईसाई मुश्किल से 10 हजार भी नहीं बचे। कभी लाहौर शहर पूरा सिखों का हुआ करता था आज मुश्किल से बचे 20 हजार पाकिस्तानी सिख भी भय और नफरत के साये में जी रहे है।

1971 के युद्ध के दौरान और बाद लगभग नब्बे हजार हिंदू राजस्थान के शिविरों में आ गए। ये लोग थरपारकर इलाके में थे जिस पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया था। 1978 तक उन्हें शिविरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। बाद में भुट्टो सरकार के साथ समझोता हुआ। पाकिस्तान को इलाका वापस दे दिया लेकिन पाकिस्तान ने लोगों को वापस लेने में कोई रुचि नहीं दिखाई। फिर 1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद पाकिस्तान में जो प्रतिक्रिया हुई उसके परिणाम में अगले पांच साल के दौरान लगभग सत्रह हजार पाकिस्तानी हिंदू भारत चले आये। इस बार अधिकांश पलायन करने वालों का सम्बन्ध पंजाब से था। 1965 और 1971 में पाकिस्तान से आने वाले हिंदूओं को आखरिकार वर्ष 2004 में भारतीय नागरिकता मिल गई लेकिन बाबरी मस्जिद की प्रतिक्रिया के बाद आने वाले पाकिस्तानी हिंदूओं को अब तक नागरिकता नहीं मिल सकी है।

पाकिस्तान के हिंदू सिंह सोढा का कहना है कि पाकिस्तान का हिंदू न घर का है न घाट का। वहां धर्म बदलने की मजबूरी, रोजी-रोटी और न जाने कब खदेड़ दिए जाने का खतरा हर समय मंडराता है। भारत सरकार विस्थापित हिंदुओं के पुनर्वास के नियम बनाती तो है, लेकिन जिला स्तरों पर उनकी पालना नहीं होती। इसलिए जो लौट रहे हैं, उनके पास धर्म बदलने के अलावा दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। कई संगठन कलमा पढ़ने वालों को रहने के लिए घर, घरेलू सामान, दहेज का सामान, काम करने के लिए सिलाई मशीनें, नहरों से खेती करने के लिए साल भर पानी का प्रलोभन भी दे रहे हैं। थारपारकर व उमरकोट इलाकों में जबरन धर्म परिवर्तन के मामले ज्यादा आ रहे हैं। जब कोई रास्ता नहीं बचता तो लोगों के सामने दो ही रास्ते बचते है या तो धर्म बचा ले या जीवन! अधिकांश लोग जीवन ही बचाना मुनासिफ समझते है। बस यही इस देश के लिए शर्म की बात है।

- सम्पादक

लिंगायत: धर्मयुद्ध का कुरुक्षेत्र बना कर्नाटक

...आज भारत में राजनीतिक दल ही धर्म विरासत के ठेकेदार बन धर्म को दंडित करते दिखाई दे रहे हैं। धर्म के नाम पर अपनी सत्ता और राजनीतिक मैदान तैयार हो रहे हैं। धर्म ने जो शिक्षा दी, वह तो पीछे रह गई। ऐसे में सवाल उठना लाजमी है कि राजनीति धर्म के लिए हो रही है या राजनीति के लिए धर्म की आड़ ली जा रही है? जहां धर्म मनुष्य को जोडता है, वहीं राजनीति ने मानवता को विभाजित कर दिया है।....

कला, संस्कृति से लेकर भगवान और धर्म भी राजनीति के कटघरे में खड़ा नजर आ रहा है। यह स्थिति क्यों बनी और क्या ऐसी ही स्थिति हमेशा बनी रहेगी? यदि समय रहते इन सवालों के हल नहीं खोजे गये तो शायद पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं बचेगा। इन दिनों कर्नाटक धर्म युद्ध का कुरुक्षेत्र बना हुआ है। राजनैतिक पार्टियां इस कुरुक्षेत्र में आमने-सामने खड़ी हैं। कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार ने विधानसभा चुनाव से ठीक पहले लिंगायत समुदाय को अलग धर्म का दर्जा देने की मांग मान ली है। इस प्रस्ताव को मंजूरी के लिए केंद्र के पास भेजा गया है। लिंगायत की मांग पर विचार करने के लिए कुछ समय पहले नागमोहन दास समिति गठित की गई थी। अब अगर केंद्र की मोहर इस पर लगती है तो भारत में एक और नये धर्म लिंगायत का जन्म हो जायेगा। जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म के बाद लिंगायत का जन्म होना सनातन धर्म पर पड़ने वाली ये आधुनिक चोट होगी।

साथ ही सवाल ये भी है कि लिंगायत कौन है और ये लोग क्यों अपने लिए अलग धर्म की मांग कर रहे हैं? क्या इसका कारण राजनैतिक है या धार्मिक? उपरोक्त सभी सवाल नई बहस और राजनीति को जन्म देने के साथ ही आज सनातन धर्म के मानने वालों से आत्ममंथन की मांग भी कर रहे है। अगर जातियों, उपजातियों, छुआछुत और सामाजिक भेदभाव के आधार पर सनातन धर्म से ये शाखाएं इसी तरह टूटती गयी तो सनातन में क्या बचेगा? क्या सनातन सिर्फ शब्दों में इतिहास के प्रश्नपत्र का एक प्रश्न बनकर रह जायेगा?

पिछले वर्ष लिंगायत समुदाय की पहली महिला जगतगुरु माते महादेवी ने बेलगाव की सभा में लिंगायत की अलग धर्म के रूप में मांग को लेकर चर्चा को तेज कर दिया था। उसी समय इस मुद्दे में तेजी आई क्योंकि कर्नाटक चुनाव निकट है अत: सत्तारूढ़ दल ने प्रदेश में 17 फीसदी लिंगायत जनसँख्या को वोटों के रूप में देखते हुए अलग धर्म की मान्यता देने को तैयार हो गये। सामाजिक रूप से लिंगायत उत्तरी कर्नाटक की प्रभावशाली जातियों में गिनी जाती है। राज्य के दक्षिणी हिस्से में भी लिंगायत लोग रहते हैं। लिंगायत का विधानसभा की तकरीबन 100 सीटों पर प्रभाव माना जाता है। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता बीएस येदियुरप्पा इसी समुदाय से आते हैं। शिवराज सिंह चौहान भी लिंगायत हैं।

कहा जा रहा है कि 1904 में अखिल भारतीय वीरशैव महासभा जोकि लिंगायत समुदाय का प्रतिनिधित्त्व करती हैं के द्वारा आयोजित महासभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें कहा गया कि लिंगायत समुदाय हिन्दू धर्म का ही भाग है किन्तु आज लिंगायत अपने लिए बौद्ध, जैन और सिखों की तरह स्वतंत्र धर्म की मांग कर रहे हैं। मांग कुछ भी हो लेकिन पर्दे के आगे धर्म है लेकिन इसके पीछे खड़ी राजनीति अपना खेल दिखा रही है, क्योंकि केंद्र सरकार इस पर आसानी से अपनी मोहर लगाएगी नहीं! इस कारण लिंगायत वोट सत्तारूढ़ दल अपने पक्ष में करने में कामयाब हो जायेगा। साफ कहें तो दुबारा पांच वर्ष के शासन की महत्वकांक्षा सनातन धर्म को दो फाड़ कर रही है।

आज भले ही कुछ लोग लिंगायत की मांग का समर्थन कर इन्हें हिन्दुओं से अलग करने का पुरजोर समर्थन करके इन्हें राज्य के अन्य हिन्दुओं को अलग-अलग बता रहे हों लेकिन ऑल इंडिया वीरशैव महासभा के अध्यक्ष पद पर 10 साल से भी ज्यादा अर्से तक रहे भीमन्ना खांद्रे जैसे लोग जोर देकर कहते हैं, ये कुछ ऐसा है जैसे इंडिया भारत है और भारत इंडिया है। वीरशैव और लिंगायतों में कोई अंतर नहीं है। बारहवीं सदी के लिंगायतों के गुरु बासवन्ना ने अपने प्रवचनों के सहारे जो समाजिक मूल्य दिए थे, अब वे बदल गए हैं। हिन्दू धर्म की जिस जाति व्यवस्था का विरोध किया गया था, वो लिंगायत समाज में पैदा हो गया है।

लिंगायत समाज अंतरर्जातीय विवाहों को मान्यता नहीं देता, हालांकि बासवन्ना ने ठीक इसके उलट बात कही थी। लिंगायत समाज में स्वामी जी (पुरोहित वर्ग) की स्थिति वैसी ही हो गई जैसी बासवन्ना के समय ब्राह्मणों की थी।

कहा जाता है सनातन संदर्भ में धर्म जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। उसमें सामाजिक और व्यक्तित्व पक्ष के साथ-साथ ज्ञान और भक्ति क्रिया इन तीनों का सुंदर समन्वय है। लेकिन यहां धर्म केवल उपासना, पूजा, और ईश्वर पर विश्वास के बजाय राजनितिक आस्था बना दिया गया है। राजनीति और धर्म दोनों ही ऐसे विषय हैं जिन्हें कभी भी अलग नहीं किया जा सकता है। चिंतन इस बात पर होना चाहिए कि राजनीति की दिशा और दशा क्या है क्योंकि ये दोनों ही विषय हर वर्ग के जीवन को प्रभावित करते हैं। राजनीति और धर्म का संबंध आदिकाल से है। बस हमें धर्म का अभिप्राय समझने की जरूरत है। वैदिक काल में जब हम जाते हैं तो यही देखने को मिलता है कि धर्म हमें जोड़ने और जनहित में काम करने का पाठ पढ़ाता था। यह इतना सशक्त था कि राजा भी इसके विरुद्ध कोई आचरण नहीं कर सकता था। ऐसा होने पर धर्म संगत निर्णय लेकर राजा को भी दंडित किए जाने की व्यवस्था थी।

आज भारत में राजनीतिक दल ही धर्म विरासत के ठेकेदार बन धर्म को दंडित करते दिखाई दे रहे हैं। धर्म के नाम पर अपनी सत्ता और राजनीतिक मैदान तैयार हो रहे हैं। धर्म ने जो शिक्षा दी, वह तो पीछे रह गई। ऐसे में सवाल उठना लाजमी है कि राजनीति धर्म के लिए हो रही है या राजनीति के लिए धर्म की आड़ ली जा रही है? जहां धर्म मनुष्य को जोडता है, वहीं राजनीति ने मानवता को विभाजित कर दिया है। हालाँकि लिंगायत को अलग धर्म का दर्जा देने का अंतिम अधिकार केंद्र सरकार के पास है। राज्य सरकारें इसको लेकर सिर्फ अनुशंसा कर सकती है। लिंगायत को अलग धर्म का दर्जा मिलने पर समुदाय को मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 25-28) के तहत अल्पसंख्यक का दर्जा भी मिल सकता है। जो फिलहाल मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी और जैन को अल्पसंख्यक का दर्जा हासिल है लेकिन कब तक! यदि यही हाल चलता रहा तो एक दिन हिन्दू भी अल्पसंख्यक दर्जा पाने की कतार में सबसे आगे खड़े दिखेंगे?

- विनय आर्य

बोध कथा — मोह ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहां अपना रे!

गतांक से आगे -

तू ही मां है, तू ही पिता है, तू ही मेरा साथी है, तू ही मेरा धन है। तू ही महल और मकान है, तू ही मेरा सब-कुछ है, मेरे देवताओं के देवता!''

युवक ने कहा-''यह सत्य है गुरुदेव, कि ईश्वर हमारा सब-कुछ है, परन्तु माता-पिता और दूसरे लोग भी सत्य हैं, उनसे मैं इन्कार कैसे कर सकता हूं? भूल कैसे सकता हूं? मेरे पिता मेरे लिए प्राण देते हैं। मुझे थोड़ा-सा कष्ट हो जाय तो बेचौन हो उठते हैं। मेरी मां तो एक दिन भी मुझे देखे नहीं तो उसके लिए संसार अन्धकारमय हो जाता है। और मेरी पत्नी तो हर समय मेरे नाम का जाप करती रहती है। आप कहते हैं, इनके मोह को छोड़ दे। कैसे छोड़ दूं?''

महात्मा बोले-''तू वहम में फंस गया है बच्चे! कोई तेरे लिए प्राण नहीं देता, कोई तेरे लिए बेचैन नहीं होता, कोई भी तेरे नाम का जप नहीं करता। इस संसार का प्रेम केवल स्वार्थ का प्रेम है। सब लोग अपने लिए तुझे प्यार करते हैं। जब तक शरीर में शक्ति और जेब में पैसा है, तभी तक ये सब लोग तुझे चाहते हैं। जब शरीर में शक्ति और जेब में पैसा न रहेगा, तब कोई तुझे चाहेगा नहीं।''

युवक ने कहा-''यह बात तो ठीक प्रतीत नहीं होती।''

महात्मा बोले-''अच्छा, मेरी एक बात मान। आज तू घर जायेगा न! तू अपनी मां से कहना-तबीयत बहुत खराब है, पता नहीं क्या हुआ है। फिर अपने सोने वाले कमरे में जाकर अपने पलंग पर लेट जाना। प्राण रोकने की विधि तू जानता है, प्राण रोक लेना। तुझे सुनाई सब-कुछ देगा, परन्तु तू बोलना मत! लाशकी भांति पड़े रहना और देख, प्राण रोकने के पूर्व अपनी मां से यह भी कहना कि 'यदि मैं मर जाऊं तो श्मशान में ले-जाने से पूर्व मेरे गुरुजी को बुला लेना। वे मुझे देख लें, उसके पश्चात् श्मशान में ले-जाना।' जा ऐसा कर, फिर तुझे मेरी बात समझ में आयेगी।''

युवक घर पहुंचा। मां को देखते ही बोला-''मां! पता नहीं आज मुझे क्या हुआ जाता है। दिल छूटा जाता है। सांस रुका जाता है। खड़ा रहने की शक्ति नहीं। ऐसा लगता है, जैसे प्राण निकल जायेंगे।''

मां ने घबराकर कहा-''ऐसी बात न कह बेटा! तेरे प्राण क्यों निकलें मेरे निकल जाएं। तू थक गया है। थोड़ी देर विश्राम कर ले, तबीयत ठीक हो जायेगी।''

युवक ने कहा-''हां, मैं विश्राम करूंगा। अपने कमने में लेटता हूं। परन्तु यदि मुझे कुछ हो जाए, यदि मैं मर जाऊं तो श्मशान में ले-जाने से पूर्व गुरु जी को बुला लेना। ऐसा करना भूलना नहीं!''

क्रमश:

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वेदों में शिक्षा विज्ञान संगोष्ठी सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताकूज मुम्बई में वैदिक मिशन द्वारा दिनांक 24 से 26 मार्च तक वैदिक मिशन सम्मेलन कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इसमें ''वेदों में शिक्षा विज्ञान'' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। मिशन के प्रधान डॉ. सोमदेव शास्त्री व मंत्री संदीप आर्य एवं कोषाध्यक्ष परीक्षित आर्य द्वारा देश के अनेक विद्वानों, संन्यासियों एवं आर्यजनों को आमन्त्रित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य सभा मंत्री भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए व वैदिक शिक्षा व महत्त्व पर अपने विचार प्रकट किये एवं सहयोग राशि की घोषणा की।

कार्यक्रम में स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी सिद्धानन्द जी, तथा आचार्या सूर्यादेवी, धारणा जी, आचार्या पवित्रा जी ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में गुरुकुलों के संचालकों के समक्ष सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा अपने वक्तव्य के अतिरिक्त प्रस्ताव रखा गया कि समस्त गुरुकुलों को एक सूत्र में बांधकर एक संगठन बनाना चाहिए। संगठन में आर्य समाज के नेताओं व सभाओं का हस्तक्षेप न हो केवल गुरुकुल के संचालक ही इसका गठन कर कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को सभी गुरुकुलों के लिए एक रूपता रखने व संगठित रहने की भावना से निश्चित करें। पढ़ाई का स्तर सुधरे तथा नये गुरुकुलों को प्रारम्भ करने पर भी नियन्त्रण रह सके। उपस्थित सभी गुरुकुल संचालकों व आचार्यों ने हर्ष ध्वनि से प्रस्ताव को पारित किया।

– सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आवासीय छात्रों का कक्षा 6 से 10 तक प्रवेश प्रारम्भ है।

पूर्व मध्यमा (कक्षा 9) से उत्तर मध्यमा (कक्षा 12)का प्रवेश अप्रैल 2018 से प्रारम्भ है।

विस्तृत नियवामवली तथ प्रवेश हेतु आवेदन पत्र रु100/– मात्र देकर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

– असीम कुमार, प्रधानाचार्य,
मो. 7579184046

''ध्यान योग साधना''
शिविर का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर, अशोक विहार–1 दिल्ली में ब्रह्मनिष्ठ आचार्य श्री आशीष जी दर्शनाचार्य तपोवन–देहरादून के सानिध्य में ''ध्यान योग साधना'' आध्यात्म विषय पर 4 से 7 अप्रैल, 2018 के बीच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। कुल नौ सत्र रहेंगे। कार्यक्रम के लिए पंजीकरण कराना आवश्यक है।

शिविर का समापन 8 अप्रैल, 2018 को होगा।

–जीवनलाल आर्य, मंत्री
मो. 9718965775, 9811122320

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा – हम सब का दायित्व
इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

मूल्य : 205/– रुपये प्रचारार्थ मूल्य : 150/– रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001, मो. 9540040339

स्वामी सर्वानन्द जी के 118वें जन्मोत्सव पर

वेद विज्ञान सम्मेलन

दयानन्द मठ दीनानगर जिला गुरदासपुर (पंजाब) के तत्त्वावधान में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के 118वें जन्मोत्सव पर वेद विज्ञान सम्मेलन का 11 से 13 अप्रैल 2018 के बीच आयोजन बड़ी धूमधम से किया जा रहा है। सम्मेलन में सम्मानित विद्वान अपने–अपने विचार प्रकट करेंगे। इस अवसर पर 12 अप्रैल को वैदिक यति मंडल सम्मेलन भी होगा। **–स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष**

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण : फार्म 4 नियम 8 (प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001
प्रकाशन की अवधि : साप्ताहिक
प्रकाशन का समय : प्रति गुरुवार एवं शुक्रवार
प्रकाशक का नाम : धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है : हाँ
मुद्रक का पता : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15– हनुमान रोड,नई दिल्ली– 110001
क्या भारत का नागरिक है : हाँ
प्रकाशक का पता : पूर्ववत्
सम्पादक का नाम : धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है : हाँ
सम्पादक का पता : पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

– धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

विद्यालयों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

आर्य वीर दल प्रीत विहार की प्रस्तुति

आर्य वीर दल कीर्ति नगर की प्रस्तुति

म. द. आर्य पब्लिक स्कूल, शादीखामपुर की प्रस्तुति

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् की प्रस्तुति

रघुमल आर्य कन्या सी.सै.स्कूल राजा बाजार की प्रस्तुति

गुरुकुल रानी बाग की प्रस्तुति

निडर परिवार के बलिदान पर आधारित दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर की प्रस्तुति 'अद्भुत बलिदान'

आर्य पब्लिक स्कूल राजाबार की प्रस्तुति

बच्चों द्वारा कार्यक्रम का संचालन

स्वागत समिति द्वारा किया गया आगन्तुक आर्यजनों का स्वागत

बच्चों के मनोरंजन के लिए

जादूगर, टाट्टू एवं जोकर की व्यवस्था

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 26 मार्च, 2018 से रविवार 1 अप्रैल, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/30 मार्च, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 मार्च, 2018

नव सस्येष्टी यज्ञ के साथ हुआ समारोह का शुभारम्भ

यज्ञ करते आर्य परिवार

नव सस्येष्टी यज्ञ सम्पन्न कराते
वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री जी

श्रीमती मोहिनी देवी एवं
श्री यशपाल आर्य जी

श्रीमती एवं श्री सुभाष चांदना जी

श्रीमती वर्षा एवं श्री संजीव आर्य जी

श्रीमती विद्या एवं श्री मनोहर लाल गुप्ता जी

श्रीमती नीतू एवं श्री राजीव मल्होत्रा जी

श्रीमती रंगोली एवं श्री आयुष आर्य जी

श्रीमती रुपांशी एवं श्री विपुल सूद जी

श्रीमती एवं श्री दिनेश आर्य जी (अमृतसर)

फूलों की होली खेलने का उत्साह कुछ अलग ही था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह